प्रगति आख्या

वर्ष 2009–10

HIMAD Samiti

"हिमालयन सोसायटी फार अल्टरनेटिव डेवलपमेन्ट"
निकट गणेश मन्दिर, गोपेश्वर, चमोली, उत्तराखण्ड
फोन/फैक्सः 01372–253068, ई मेल–himadsamiti@gmai

भूमिका

संगठनों को सतत् एवं संघर्षरत रहने के लिए समुदाय के हितकारी मुद्दों पर वकालत और सहभागिता एक महत्वपूर्ण पहलू है। किसी भी प्रकार के सामाजिक, शैक्षणिक राजनैतिक या आर्थिक बदलाव के लिये महज संगठनो के गठन को पर्याप्त मानना भी उचित सोच नही हो सकती, जब तक कि गठित संगठन अपने उद्वेश्यो पर स्पष्ट सोच के साथ आगे नही बढता हें। समुदाय के उत्थान के लिये लोगो को संगठित होकर सहभागी रूप मे आगे बढने के लिये प्रेरित किया जाना आज के परिपेक्ष मे अत्यन्त आवश्यक हैं।

समुदाय की आवश्यकता को मध्यनजर रखते हुये हिमाद द्वारा इस वर्ष बाल, किशोर सभा, महिला स्वंय सहायता समूह, महिला मंगल दल, किसान समूह एंव अन्य ग्राम स्तरीय संगठन व जन संगठनो के संगठनात्मक ढॉचे को सशक्त करने की दिशा में प्राथमिकता प्रदान की गयी। वहीं समाज को प्रभावित करने वाले विभिन्न मुद्दों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्किरण एवं जल, जंगल, जमीन, पर समुदाय की हकदारी आदि पर सामुदायिक हस्तक्षेप करने का प्रयास किया गया। साथ ही समाज के पिछडे एवं शोषित वर्ग को संगठित कर आर्थिक सबलता के पक्ष को मजबूती प्रदान करने हेतु उनकी क्षमता विकास के लिए समय–समय पर शिक्षण– प्रशिक्षणों का आयोजन भी किया गया।

हिमाद एक ओर परिवर्तन प्रक्रिया को फैसलिटेट करने के लिए सामुदायिक विकास गतिविधियों को शिक्षण–प्रशिक्षण के माध्यम् से संचालित करती है वहीं दूसरी ओर हम यह भी मानते है कि शिक्षण–प्रशिक्षण एक सीखने का वातावरण तैयार करता है। इसलिए कि प्रशिक्षण अपने आप में एक नया रोल अदा करता है, जिसमें लोग अपने निजी जीवन की परिस्थितियों से सीखते और समझ कर विश्लेषण करते हैं व साथ ही अनुभव आदान – प्रदान कर विकास की गति बढाते हुए अपने जीवन को उज्जवल एवं सफल बनाने के लिए प्रेरित होते हैं। यह वर्ष हिमाद के लिए स्वयं का सांगठनिक एवं चिरस्थायी विकास की दिशा में एक कदम आगे बढने का वर्ष भी रहा है जिसके तहत् विविध तकनीकी प्रशिक्षण एवं हिमाद शिक्षा, प्रसार एवं प्रशिक्षण केन्द्र का ढॉचा प्रारम्भ किये गये।

हम अपने प्रयासों में समसामयिक एवं भरपूर सहयोग के लिए काई नई दिल्ली, नेहरू युवा केन्द्र संगठन, उत्तराखड जैविक बोर्ड, एबीसी/राजूअल्पन, फयूचर ग्रुप, पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार/डोर, एवं सैकडों व्यक्तिगत तथा लक्ष्य समूह के उन सभी साथियों की भूमिका के लिए कृतज्ञता से अभिस्वीकृति करते हैं।

डा0 डी0 एस0 पुण्डीर
सचिव

जागृति VI

उत्तराखण्ड के सीमान्त जनपद चमोली में इस परियोजना की शुरूआत 15 जनवरी 2002 से किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन अभी तक छः चरणों में किया गया। जिसमें की 25 गॉवो को जोडा गया। प्रथम चरण में कर्णप्रयाग वि0ख0 के सिंलगी, सैज,मौली, गनोली डोठला, द्वितीय चरण पोखरी वि0ख0 के सलना जौरसी, मसोली ,सांकरी ,और खाल बजेठा ,तृतीय चरण कर्णप्रयाग के ही गिरसा, जिलासु, उतरों, ऐरास, और डिडोली तथा चतुर्थ चरण कण्डारा, सुनाली, नौली, हिडोली, चटिग्याला, बातौली, पंचम चरण पुराने 20 गॉवो में संचालित किया जा गया जिसमें कि कलस्टर स्तर पर कार्यक्रम संचालित किया गया जबकि वर्तमान समय (जनवरी 2008 से दिसम्बर 2009) में जागृति कार्यक्रम का छंठवा चरण कर्णप्रयाग वि0ख0 के कनोठ नैणी , छातोली, कल्याडी, बैनोली, गॉवो में संचालित किया गया।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सभी आयु वर्ग (बाल, किशोर ,महिला, पुरूष,) को लक्ष्य मानकर संगठन निर्माण, स्वय का क्षमता विकास, स्वरोजगार को बढावा देना अपने कार्यो के प्रति जिम्मेदारी एवं जागरूक होना शैक्षणिक भ्रमण से सोच में व्यापकता लाना गॉवो में हो रहें पलायन को रोकने के उपाय, गॉव में श्रमदान कर साफ–सफाई की ओर ध्यान देना, स्वास्थ्य, स्वच्छता एंव तकनीकी शिक्षा के प्रति जागरूकता, साथ ही पर्यावरण में निरन्तर हो रहें दुष्प्रभावो (जैसे पॉलीथीन की बहु मात्रा में उपयोग निरन्तर पेड कटान आदि) के प्रभाव एवं उनके उपायों के प्रति जागरूकता।

जबकि व्यवसायिक प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न प्रशिक्षण जैसे आचार, मुरब्बा, जूस स्क्वैस, आम का आचार, नीबु का आचार तथा साथ ही संतरे नांरगी, बुरॉस ऑवले आदि का प्रशिक्षण दिया गया। प्राप्त प्रशिक्षण को सीखकर गॉव वालों द्वारा स्वयं जूस अचार आदि घर में बनाये जाने लगा। इस तरह से लोगों में आजीविका को भी सुधार सकते हैं। कार्यक्रम के दौरान सभी गॉववासियों में व्यवहारिक जागरूकता बढी। हिमालयन नागरिक मंच के बैनर तले महिलाओं बच्चों किशोरों और गांवों के मुददों को शासन प्रशासन तक ले जाया गया और उनकी समस्याओं के लिए प्रशाशन स्तर तक प्रयासरत रहे। इसके मुख्य परिणाम गॉवों में महिलाओं द्वारा 8 मार्च अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाने, मासिक बैठकों को निरन्तर कराने और अपने हकों की लडाई स्वयं लडने के रूप में देखा जा रहा है।

शैक्षणिक भ्रमण एवं संगठन विकास

जागृति के अन्तर्गत गॉवों के समूह पदाधिकारियों का पॉच दिवसीय राज्य स्तरीय शैक्षणिक भ्रमण किया गया जिसमें उधान नर्सरी जैविक कृषि जल संरक्षण पुष्पों की खेती आदि के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी प्राप्त की। इस भ्रमण से जहॉ एक और क्षमता विकास हुआ वहीं दुसरे तरफ वहॉ के परिवेश को देखने समझने को मौका मिला तथा भ्रमण के अनुभवों को समुदाय के समक्ष भी रखा।

संस्था विकास कार्यक्रम के तहत अंग्रेजी भाषा का ज्ञान एकाउन्ट दस्तावेजीकरण कम्प्यूटर इंटरनेट के लिए साथियों का क्षमता विकास किया गया। जिसमें अंग्रेजी भाषा के लिए टयूशन, एकाउन्ट, कम्प्यूटर के लिये विभिन्न संस्थाओं से प्रशिक्षण दिये गये। जिसमें प्रत्येक साथी व्यक्तिगत रूप से अपनी क्षमता विकास करने की प्रक्रिया को बढा रहा है।

कार्यक्रम के उदद्वेश्य

- लोगों को संगठित कर सामाजिक, आर्थिक उन्नति के लिए प्रेरित करना।
- व्यक्ति और समूहों में विश्लेषण की क्षमता को उभार कर उनके आत्मविश्वास में वृद्वि करना।
- ज्ञान एवं सूचना विकास के लिए सामाजिक समूहों की नेटवर्किग।
- समुदाय को आत्म निर्भर, शोषण व भेदभाव रहित लोकतांत्रिक समाज बनाने के लिए संवेदित करना।
- समूहों की कार्यनीति और गतिविधियों में जेण्डरगत समानता के दृष्टिकोण को समाहित करने में सहयोग करना।
- उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं का बेहतर उपयोग एवं समुदाय का शासन प्रशासन के साथ समन्वयक हेतु वातावरण तैयार करना।

गतिविधियॉ

			प्रतिभागी		
क्रमस0	गतिविधियॉ	कार्यशाला	महिला	पुरूष	कुल
1.	राज्य स्तरीय शैक्षणिक भ्रमण	01	23	11	34
2.	किशोर समूह का जिला स्तरीय शैक्षणिक भ्रमण	01	24	12	
3.	बाल समूह का जिला स्तरीय शैक्षणिक भ्रमण	01	18	23	
4.	पुरूष समूह का जिला स्तरीय शैक्षणिक भ्रमण	01	4	37	41
5	फेडरेशन के साथ कार्यशाला	02	43	29	148
6	व्यावसायिक प्रशिक्षण	01	30	02	32
7	बाल समूहों का ग्राम स्तरीय प्रशिक्षण	05	77	71	148
8	किशोर समूहों का ग्राम स्तरीय प्रशिक्षण	05	105	89	194
9	महिला समूहों का ग्राम स्तरीय प्रशिक्षण	05	199	02	201
10	पुरूष समूहों का कलस्टर स्तरीय प्रशिक्षण	01	02	34	36
11	जनसभा	01	158	98	256
12	फोकस ग्रुप इंटरव्यू	01	38	17	55
13	जागृति 7 फेस के लिये स्टाफ का चयन	–	–	–	–
14	जागृति 7 फेस में किये जाने वाले कार्यों के लिये बैठक	01	06	10	16

बाल अधिकारों के लिए जन प्रयास

2003 से शुरूआत करते हुए संस्था बाल अधिकारों के लिए उत्तराखण्ड में बाल अधिकारों पर गहनता से कार्यकर रही है।विगत वर्षों की गतिविधयों को आगेबढाते हुए इस वर्ष भी कार्यक्षेत्र में ग्राम स्तरीय संगटन निर्माण करना, क्षेत्र में गर्भवती महिलाओं व मातृशिशु मृत्यु दर कम करवाने हेतु टीकाकरण करना, बाल अधिकारों को प्रभावित करने वाले कारको की पहचान कर समुदाय का संवेदिकरण एवं सशक्तिकरण कर नीतिगत पैरवी का कार्य किया गया अन्तराष्ट्रीय परिदृश्य का स्थानीय मुददों तथा उनसे प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होने वाले जल, जंगल, जमीन, मानव व्यापार आदि ज्वलंन्त मुददों का विशलेषण कर उनका बाल अधिकारों पर पडने वाले प्रभावों के प्रति समुदाय का दृष्टिकोण निर्माण करना।

उददेश्य–

- ❖ समुदाय को बाल अधिकारो के प्रति संवेदित करना।
- ❖ परियोजना क्षेत्र की समस्याओं का आंकलन कर सम्बन्धित गतिविधियों का कियावन्यन करना।
- ❖ समस्त बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोडना ।
- ❖ जनपक्षीय नीतियों की पैरवी हेतु नेटर्वकिंग एवं जन समुदाय को संवेदित करना।
- ❖ उत्त्राखण्ड में बाल अधिकारों की स्थापना के लिए लोगों की समझ विकसित करना।
- ❖ स्थानीय समस्याओं का अध्ययन एवं समुदाय को समस्या समाधान हेतु तैयार करना।
- ❖ दलित असहासय एवं पिछडे वर्ग के समुदाय का क्षमता विकास करना।
- ❖ विभिन्न सरकारी योजनाओं से लोगों का जुडाव करना।
- ❖ रोजगार एवं आत्मनिर्भरता के लिए लोगों को प्रेरित करना ।
- ❖ संगठन निर्माण व क्षमता विकास करना ।
- ❖ बृहद मुददों पर जन समुदाय को संवेदित करना।

अधिकार	कार्यक्रम	कार्यक्रम संख्या	महिला	पुरूष	योग
जीने का अधिकार	स्वास्थ्य उपकेन्द्रों व सुविधाओं का सक्रियकरण करना	4	250	67	317
	जन्म पंजीयन परामर्श		130	32	162
	नये ए एन एम सेन्टर की मॉग करना	3	56	44	100
	महिलाओं एवं बालिकाओं के साथ खाद आदतों के प्रति संवेदित करना	3	67	28	95
	गर्भवती महिलाओं के साथ टी टी का टीका सुनिश्चित करना	–	55	–	55
	ग्रम स्वस्थ्य समिति को मजबूति प्रदान करना	–	–	–	–
	आगॅनबाडी केन्द्रों का सक्रियकरण करना	–	–	–	–
	वनाधिकार पर सहयोगी संगठन कार्यकर्ताओं के साथ कार्यशाला	1	7	12	19
विकास का अधिकार	प्रा0 जू0 व इण्टर कालेजों में अध्यापकों की मॉग करना	2	15	19	44
	प्रा0 वि0 में बुनियादी संविधाओं के लिए पंचायत को प्रेरित करना	–	–	–	–
	भूमिहीनों के लिए भूमि की मॉग करना	1	58	76	134
	नरेगा योजना प्रभावी कियावन्यन	3	90	78	168

	आजीविका योजनाओं की सूचनाओं का संग्रह एवं क्रियान्वयन	–	–	–	–
सुरक्षा का अधिकार	मादक द्रब्यों से बच्चों की सुरक्षा	3	31	55	86
	कामकाजी बच्चों के साथ बैठक	3	50	65	115
	बाल दुब्यवहार एवं यौन दुर्यब्यवहार की स्थिति को देखना	–	–	–	–
	संकट ग्रस्त बच्चों को चिन्हीत कर उनके परिवारों को स्कीमों से जोडना	3	21	24	45
	स्टाफ व कोर टीम का अभिमुखीकरण करना	1	6	7	13
भागीदारी का अधिकार	बाल एवं किशोर संगटनों के साथ मासिक बैठक	10	60	90	150
	बाल संगठनों के साथ अलग अलग स्तरों पर संगठन निर्माण करना	3	23	18	41
	बाल संगठनों के सदस्यों का जिलास्तरीय शैक्षणिक भ्रमण	2	46	36	82
	बाल मेला	3	456	587	1043

उपलब्धियॉ

- जन्म पंजीयन व प्रमाण पत्र के लिए समुदाय स्वयं जाने लगा।
- बाल अधिकारों पर समुदाय की समझ बनी। बाल अधिकारों को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान हुई।
- शिक्षा स्वास्थ्य पोषण एवं टीकाकरण के प्रति जागरूकता बढी।
- ग्राम स्तरीय विभिन्न समितियॉ सक्रिय एवं उनकी जानकारी समुदाय को मिली।
- जल, जंगल, जमीन, पर समुदाय बाल अधिकारों के प्रति जागरूक हुआ तथा जन संगठनों,सामुदायिक संगठनों द्वारा नीतिगत पैरवी की गयी।
- अवसरों की पहचान कर ब्यक्तिगत एवं नेतृतव क्षमता का विकास हुआ।
- बच्चों द्वारा अपनी समस्याओं और आवश्यकताओं की पहचान कर उनके समाधान हेतु पंचायतों के निराकरण की मॉग की गयी।
- विभिन्न गतिविधियों में भागीदारी से किशोरों ,बच्चों,महिलाओं ,व पुरूषों का आत्मविश्वास बढा।
- परियोजना क्षेत्र की समस्याओं का ऑकलन कर सम्बधित गतिविधियों का क्रियावन्यन किया गया।
- किशोरों में शारीरिक व मानसिक परिर्वतन के प्रति जागरूकता बढी।
- पंचायतों के माध्यम से स्थानिय मुददों की पैरवी हुई।
- लोगों में संगठनात्मक भावना बनी व अपने गॉव व क्षेत्र की समस्याओं के प्रति लोग जागरूक हुए।

हिमालयी आजीविका सुधार परियोजना

माह अप्रैल 2006 मे हिमाद समिति गोपेश्वर चमोली द्वारा आजीविका परियोजना का क्रियान्वयन क्षेत्र मे शुरू किया गया। जिसमें सर्वप्रथम अप्रैल प्रथम मे आजीविका परियोजना के कार्यकर्ताओं ने कार्य शुरू किया। जिसमे सर्वप्रथम परियोजना क्षेत्र मे चयनित गांवों का भ्रमण कर 18 गांवो का अंतिम चयन किया गया।

साथ ही कार्यकर्ताओं के क्षमता विकास के लिए जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई चमोली एवं संस्था द्वारा कार्यकर्ताओं को विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे कार्यकर्ताओ की क्षमता का विकास हो ताकि वे क्षेत्र मे जाकर परियोजना के उद्देश्य को स्पष्ट कर सकें एवं ग्रामीणो का परियोजना के उद्देश्य के अनुसार कार्य करने के लिए प्रशिक्षित एवं प्रेरित कर सके।

वर्ष 2009–10 में कार्यकर्ताओ की क्षमता वृद्वि के साथ–साथ विभिन्न गतिविधियों को भी संचालित किया गया जिसमें गांवों का सहभागी आर्थिक वर्गीकरण किया गया, ताकि गांवो की स्थिति एवं गांव मे प्रत्येक परिवार के आर्थिक, सामाजिक स्थिति की पहचान हो सके एवं साथ ही परियोजना के उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिए वीडियो फिल्म उडना है हमे नीले आसमां में का भी प्रदर्शन किया गया।

परियोजना क्षेत्र मे महिला कार्यबोझ को कम करने के उद्देश्य से नैपियर, गिन्नी घास का रोपण करवाया गया तथा वर्मी कम्पोस्ट पिटों का निर्माण करवाया गया साथ ही महिलाओं के कार्यबोझ मे कमी करने एवं पुरूशों की सहभागिता को बढाने के उद्देश्य से कृषि यत्रों, धान थ्रेशर, मंडुवा थ्रेशर, ओसाई पंखे का प्रदर्शन किया गया ताकि महिलाओ का कार्यबोझ कम हो एवं साथ ही पुरूषों की भी सहभागिता बढे।

प्रदर्शन गतिविधि के तौर पर गांव में उत्पादकता वृद्वि के लिए राजमा बीज का वितरण, गेंहूँ बीज का वितरण एवं सरसों बीज का वितरण किया गया, साथ ही क्रोयलर चूजों का वितरण भी किया गया जिसका अपेक्षित परिणाम सामने आये और ग्रामीणों का परियोजना के प्रति रूझान बढा।

विभिन्न प्रकार के अध्ययन वर्ष भर की अवधि मे किये गये ताकि वास्तविक गरीब तक पहुंच बन सके और उसके सामाजिक सुरक्षा के प्रयास किये जा सकें एवं साथ ही उनके द्वारा की जाने वाली गतिविधियों को भी चिन्हित किया जा सके।

इसके उपरान्त परियोजना क्षेत्र के विभिन्न गतिविधियों से जुडे लोागों को उनकी आवश्यकता के आधार पर विभिन्न गतिविधियों पर आधारित प्रशिक्षण दिये गये जिसमें मुख्य रूप से कृषि पर आधारित प्रशिक्षण एवं नई तकनीकी कृषि यंत्रों का प्रदर्शन किया गया तथा उद्यान पर आधारित लोगों के लिए प्रशिक्षण कर पौधारोपण के लिए प्रेरित किया गया, साथ ही बेमौसमी सब्जी उत्पादन के प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन किये गये।

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को आज के परिपेक्ष में अपने अधिकारों एवं नई सूचनाओं को प्रदान किया जाना है।, साथ ही महिलाएं अपनी अभिव्यक्ति स्वतन्त्र एवं पूर्ण रूप से कर सकें। इसके लिए उन्हें विभिन्न मंचों के माध्यम से अवसर प्रदान करने के प्रयास किये गये। साथ ही प्रतिभावान महिलाओं को सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में चिन्हित कर प्रशिक्षित किया गया।

परियोजना क्षेत्र के सभी परिवारों की सामाजिक सुरक्षा को मद्देनजर रखते हुए विभिन्न कैम्पों एवं व्यक्तिगत प्रयासों से सभी परिवारों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के प्रयास किये गये, जिसमें रेखा विभागों एवं जिला प्रशासन का भी सहयोग लिया गया।

इन सभी गतिविधियों को क्रियान्वित करने के लिए समुदाय आधारित संगठनों का निर्माण किया गया जिसमें मुख्य रूप से स्वयं सहायता समुहों, महिला मंगल दल, वन पंचायत, युवक मंगल दल एवं किशोरी समूहों का गठन किया गया एवं इनके सशक्तिकरण के लिए विभिन्न प्रशिक्षणों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

इसके साथ ही वर्ष 2007 से 2009–10 तक उत्तराखण्ड पर्वतीय आजीविका संवर्धन कम्पनी (उपासक) द्वारा परियोजना से गठित स्वंय सहायता समूहों के साथ ब्यापारिक गतिविधियों के सफल संचालन हेतु विभिन्न प्रकार के प्रदर्शन परियोजना क्षेत्र में किये गये जिसमें मुख्य रूप से फसल चक्र परिवर्तन, बेमौसमी सब्जीयों का उत्पादन, क्रायलर पालन हेतु मदर यूनिट का निर्माण आदि किया गया।

वर्ष भर की प्रमुख गतिविधियां

- वर्ष 2009–10 में 104 के सापेक्ष 82 स्वयं सहायता समूहों की स्थापना की गयी।
- वर्ष 2009–10 में 169 के सापेक्ष 61 बर्मी पिटों की स्थापना की गयी।
- परियोजना क्षेत्र में 10000 चाराघास टब्सों का रोपण किया गया एवं 17505 टब्सों का विस्तारीकरण किया गया।
- परियोजना क्षेत्र में 304 कृषि यन्त्रों का विस्तारीकरण किया गया।
- परियोजना क्षेत्र में परियोजना के सहयोग से 10 चारानादों का प्रदर्षन किया गया
- परियोजना क्षेत्र में 14 परिवारों को समाज कल्याण विभाग द्वारा सहायता प्रदान की गयी। एंव 87 स्वंय सहायता समूह सदस्यों को बीमा योजना से जोड़ा गया
- परियोजना क्षेत्र में 1308 मुर्गियों का वितरण किया गया।
- परियोजना क्षेत्र में 80 मुर्गी बाड़ो का निर्माण किया गया
- पूरे परियोजना क्षेत्र की महिलाओं को विभिन्न शैक्षणिक भ्रमणों, कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षणों के माध्यम से समूहों की आवश्यकता, स्वास्थ्य, महिला अधिकारों, कानून आदि विषय पर जागरूक किया गया।
- परियोजना क्षेत्र में आजीविका संवर्धन गतिविधियों के अंतर्गत 250 किलो हल्दी बीज का वितरण किया गया जिससे प्रेरित होकर गरीब परिवार स्वयं खरीदकर आय अर्जन कर रहे हैं।
- विभिन्न विभागों की योजनाओं को परियोजना क्षेत्र में संबधित हितभागियों तक अभिसरण के माध्यम से पहुचांने का कार्य निर्बाध गति से सतत चल रहा है।

परियोजना अन्तर्गत गॉव व परिवारों का विवरण

विकासखण्ड में परियोजना के अन्तर्गत लक्षित गांव, परिवार व लक्ष्य पूर्ति

विवरण	विकासखण्डवार लक्ष्य व प्रगति	कुल
1	2	3
1. कुल ग्रामों की संख्या	18	18
2. कुल परिवारों की संख्या	1303	1303
3. वर्षवार लक्षित ग्रामों व परिवारों की संख्या		
(अ) वर्ष 05–06		
I) ग्रामों की संख्या	18	18
II) परिवार की संख्या	898	898
(ब) वर्ष 06–07		
I) ग्रामों की संख्या	18	18
II) परिवार की संख्या	898	898
(स) वर्ष 07–08		
I) ग्रामों की संख्या	18	18
II) परिवार की संख्या	898	898
4. कुल लक्षित ग्रामों की संख्या	18	18
5. कुल लक्षित परिवारों की संख्या	898	898
वर्तमान वर्ष में लक्ष्य पूर्ति 2009–10		
(अ) ग्रामों की संख्या	18	18
(ब) परिवारों की संख्या	610	610
लक्ष्यों के सापेक्ष पूर्ति का प्रतिशत		
(अ) ग्राम प्रतिशत	100	100
(ब) परिवार प्रतिशत	67.9	67.9
क्रमिक लक्ष्य पूर्ति 2009–10		
1. ग्रामों की संख्या	18	18
2. परिवारों की संख्या	610	610
कुल लक्ष्यों के सापेक्ष पूर्ति का प्रतिशत		
(अ) ग्राम (प्रतिशत)	100	100
(ब) परिवार (प्रतिशत)	67.9	67.9

हिमाद शिक्षा प्रसार एवं प्रशिक्षण केन्द्र

सांगठनिक एवं चिरस्थायी विकास को मध्य नजर रखते हुए हिमाद ने इस वर्ष एबीसी/राजूअल्पन स्वीडन के सहयोग से ग्राम रिखोली (हडाकोटी) कर्णप्रयाग, चमोली में शिक्षा प्रसार एवं प्रशिक्षण केन्द्र का ढाचा तैयार करने की शुरूआत की है। केन्द्र मुख्य रूप से व्यवहारिक, तकनीकी एवं आय सजृनात्मक शिक्षा के प्रसार हेतु काम करेगा। इस केन्द्र से बच्चे, महिला, युवा एवं विशेष वर्ग के लोग खासकर जो हासिये पर हो शिक्षा का लाभ उठा पायेगें। यह केन्द्र सैद्वानतिक पढाई लिखाई के साथ ही प्रदर्शन इकाईयों की स्थापना के लिए भी कार्य करेगा। वर्तमान में भवन निर्माण कार्य अन्तिम चरण में चल रहा है।

जैविक उत्पाद समूह

हिमाद द्वारा माह दिसम्बर 2009 से जनपद चमोली के विकास खण्ड दशोली के 12 गॉवों (ल्वां, दिगोली, हाट, अग्थला, नौरख, किस्ली, गडोरा, रैतोली, गौंणा, निजमुला, सैंजी, व्यारा) में उत्तराखण्ड जैविक उत्पाद परिषद के सहयोग से किसानों के संगठनों के साथ कृषि, उद्यान, औषधीय व संगन्ध पौधे, वन, जड़ी बूटी, दुग्ध उत्पादन व पशुपालन जैसे कार्यो के विकास हेतु कार्य कर रहा है। जिसका मुख्य उद्वेश्य जैविक कृषि की उन्नति एवं प्रदेश को जैविक प्रदेश बनाना है । जबकि हिमाद भी इसी उदेश्य की पूर्ति हेतु गॉव में समुदाय के साथ जैविक खेती के बारे में चर्चा परिचर्चा करता है।

माह जनवरी 2010 में विकास खण्ड दशोली के 8 गॉवों का सर्वे करने के पश्चात स्वयं सहायता समूह बनाये गये साथ ही इन समूहों के साथ बैंठकें कर इन समूहों का **एस0बी0आई पीपलकोटी** में खाते खोले गये समूहों का विवरण निम्न प्रकार है।

क्रमस0	**समूह का नाम (दशोली ब्लाक में)**	**खाता संख्या**
1	सुहाती जैविक उत्पाद समूह, ल्वां दशोली	111618779404
2	नन्दा देवी जैविक उत्पाद समूह, दिगोली	11618766337
3	जय चण्डिका जैविक उत्पाद समूह, हाट	30453299759
4	जय बण्ड देवता जैविक उत्पाद समूह, अग्थला	30463172130
5	प्रगति जैविक उत्पाद समूह, नौरख	11018781673
6	जय भूमियाल जैविक उत्पाद समूह, किरूली	11618766531
7	जैविक कृषि समूह, गडोरा	11618766053
8	जय भगवती जैविक उत्पाद समूह, रैतोली	30463181383

इसी क्रम में फरवरी माह में 4 बचे हुए गॉवों का सर्वे कर समूह गठन किया गया तथा साथ ही समूहों का **मिनी बैंक ब्यारा** में खाते खोले गये।

क्रमस0	समूह का नाम (दशोली ब्लाक में)	खाता संख्या
1	भगवती माता जैविक उत्पाद समूह, गौंणा	384
2	गंगा जैविक उत्पाद समूह, निजमुला	262
3	मॉ दुर्गा जैविक उत्पाद समूह, सैंजी	1082
4	मॉ भगवती जैविक उत्पाद समूह, ब्यारा	1044

फरवरी–मार्च 2010 में 12 गॉवों में बने समूहों के साथ बैठक व चर्चा करके जैविक खेती एवं फसलों के बारे में जानकारी ली गई तथा समस्याओं के समाधान हेतु चर्चा की गई।

अन्य

सम्पूर्ण वित्तीय वर्ष में उपरोक्त परियोजनाओं के सफल संचालन के अतिरिक्त हिमाद ने अनेक संस्था, नेटवर्क, विभाग एवं ऐलांइसो द्वारा आयोजित क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय कार्यशाला/ प्रशिक्षण एवं सैमीनारों में प्रतिभाग किया। इसी संदर्भ में हिमाद ने राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी कार्यक्रम के सोसल आडिट, घरेलू हिंसा से संरक्षण अधिनियम पर कार्यशाला, 6 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए कार्यक्रम पर राष्ट्रीय सेमीनार, सूचना के अधिकार अधिनियम पर कार्यशाला, शिक्षा अधिकार के क्रियान्वयन हेतु अभियान एवं स्वैक्षिक संस्थाओं की चुनौतियां व सुशासन आदि में सक्रिय प्रतिभाग किया। इस वर्ष हिमाद ने अपनी क्षमता एवं कौशल वृद्वि पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया। कार्यकर्ताओं ने भाषा, कम्प्यूटर, विषय विशेष पर प्रस्तुतीकरण, शिक्षण प्रशिक्षण की विधियां, संगठन का सामाजिक पुर्नावलोकन, साक्षात्कार विधियां एवं रिपोर्ट राइटिंग आदि में अपनी क्षमताओं को बढाकर सांगठनिक विकास की प्रक्रिया में सक्रिय भाग लिया।